“मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा और प्रभा खेतान के आत्मकथाओं में सामाजिक एवं पारिवारिक विश्लेषण”

राँची विश्वविद्यालय के मानविकी संकाय के अंतर्गत हिन्दी

विभाग में पी एच .डी . उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध -विषय की रूपरेखा

वर्ष - 2024

शोध निर्देशिका :

डॉ. कुमारी उर्वशी

सहायक प्राध्यापिका

हिन्दी विभाग

राँची वीमेंस कॉलेज ,राँची

शोधार्थी :

अंकिता

एम .ए . यू . जी . सी . नेट

राँची विश्वविद्यालय ,राँची

“ मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा और प्रभा खेतान के आत्मकथाओं में सामाजिक एवं पारिवारिक विश्लेषण”

अनुक्रमणिका	पृष्ठ संख्या
1.1 शोध विषय का परिचय	1-3
1.2 शोध कार्य की प्रेरणा	3
1.3 शोध कार्य का उद्देश	3-4
1.4 शोध कार्य की उपादेयता	4
1.5 पूर्व शोध कार्य	4-5
1.6 शोध विषय की प्रासंगिकता	5
1.7 शोध कार्य का महत्व	5
1.8 अध्ययन प्रविधि	5-6
1.9 शोध कार्य का ज्ञान विस्तार	6
1.10 भविष्य में शोध कार्य होने की संभावना	7
1.11 अध्यायीकरण	7-9
1.12 सहायक ग्रंथों की सूची	9-12

“मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा और प्रभा खेतान के आत्मकथाओं में सामाजिक एवं पारिवारिक विश्लेषण”:-

1.शोध विषय का परिचय :-

सदियों से चली आ रही अपनी दासता के प्रति अपना प्रतिरोध दर्ज कराने के सन्दर्भ में स्त्री-आत्मकथाओं का सृजन आरम्भ हुआ। स्त्रियों ने अब तक जो कुछ कहने-सुनने की पाबंदी थी, उसका अतिक्रमण करते हुए अपनी बात को सार्वजनिक करना शुरू किया। स्त्रियों की मानसिक चेतना में आए इस बदलाव में विश्व स्तर पर चलनेवाले विभिन्न नारी मुक्ति आन्दोलनों की विशेष भूमिका रही है। जागरूकता के इस दौर में हिन्दी भाषा में ही नहीं बल्कि भारत की अन्य भाषाओं में भी स्त्री आत्मकथाओं का महत्वपूर्ण सृजन होने लगा है।

हिन्दी भाषा में रचित आत्मकथाओं में हर रचनाकार की अपने जीवन की अलग-अलग समस्याएँ हैं, संघर्ष है, जिसको उन्होंने उकेरा है। हिंदी साहित्य की सुप्रसिद्ध लेखिका मन्नू भंडारी की आत्मकथा ‘एक कहानी यह भी’ एक बेचैन स्त्री की आत्मा की अकुलाहट भरी कथा है जो आर्थिक रूप से सशक्त तो है ही एक रचनाकार के रूप में भी प्रतिष्ठित हैं। वह भावनात्मक रूप से अपने घर और पति से बँधी होने के कारण पुरुष वर्चस्व को तोड़ नहीं पाती और जीवन में समझौतावादी दृष्टिकोण को अपनाती है। मैत्रेयी पुष्पा की दो आत्मकथात्मक कृतियाँ हैं- 'कस्तूरी कुंडल बसै' और 'गुड़िया भीतर गुड़िया’। पहली आत्मकथा 'कस्तूरी कुंडल बसै’ में उन्होंने अपनी माँ कस्तूरी के जीवन संघर्षों को विस्तार दिया है। इस आत्मकथा में स्त्री के विवाह, दहेज और उसकी इच्छा अनिच्छा से जुड़ी

विवशता को माँ कस्तूरी उद्घाटित करती है। ये समस्याएँ विशुद्ध रूप से सामाजिक हैं। दूसरी आत्मकथा 'गुड़िया भीतर गुड़िया' मात्र एक स्त्री की आत्मकथा नहीं है बल्कि यह हर उस औरत की कथा है, जो पारिवारिक बंधनों और सामाजिक वर्जनाओं से जूझने का हौसला प्राप्त करना चाहती है, अपनी बेहतर पहचान के लिए। प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' से पता चलता है कि बचपन में उनके सगे-सम्बन्धियों द्वारा ही उनका यौन शोषण किया गया जो उनके तन-मन पर अमिट निशान छोड़ जाता है। परिवार में स्नेह नहीं मिलने के कारण प्रभा खेतान का अतृप्त मन एक विवाहित पुरुष का वरण कर लेता है। लेकिन डॉ. सर्राफ के साथ बनाए गए सम्बन्ध को न तो समाज स्वीकार कर पाता है और न ही डॉ. सर्राफ सार्वजनिक रूप से स्वीकार कर पाते हैं।

इन आत्मकथाओं में लेखिकाओं ने अपनी पारिवारिक, सामाजिक और व्यक्तिगत समस्याओं को प्रतिरोधात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। इन आत्मकथाओं में प्रबुद्ध कथाकार और आर्थिक रूप से सक्षम होते हुए भी खुलकर विरोध नहीं कर पाने का तथ्य खुलकर सामने आया है।। मन्नू भंडारी के घर छोड़ने का फैसला, एक तरह से उनके अन्दर की परम्परागत स्त्री के मुक्त होने का संकेत है, परन्तु मजबूरी और विवशता में लिया गया यह फैसला उन्हें शान्ति नहीं देता, उनकी बेचैनी बरकरार रहती है। मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा 'कस्तूरी कुंडल बसै' उनकी माँ कस्तूरी के जीवन की संघर्ष गाथा ही नहीं है बल्कि एक स्त्री के सशक्त होने की गाथा भी हैं। एक स्त्री किस तरह समाज और परिवार से टकराती हुई अपनी मुकम्मल मंजिल तक पहुँचकर पुरुषों के समकक्ष खड़ी हो जाती है और यही इस आत्मकथा का वैशिष्ट्य भी है। दूसरी आत्मकथा मैत्रेयी पुष्पा के स्वयं के सशक्त और निर्भीक होने की कथा है। ये दोनों आत्मकथाएँ, स्त्री की मानसिक चेतना में आए बदलाव की ओर संकेत करती हैं। 'अन्या से अनन्या' बिल्कुल आधुनिक सोच के संदर्भ में एक स्त्री के द्वारा 'वैवाहिक संस्था' को नकारे जाने की कथा है। लीक से हटकर विवाहित पुरुष से जुड़ने का साहस तो प्रभा खेतान ने दिखाया, परन्तु उनके अन्दर की परम्परागत

संस्कारों वाली स्त्री अपने आपको पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं किए जाने के दर्द से आजीवन छटपटाती भी रही। प्रभा खेतान के विचारों में विरोधाभास दिखाई देता है क्योंकि एक ओर तो वे वैवाहिक संस्था को नकारती हैं और दूसरी ओर अपने को पत्नी के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास करती हैं।

इन तीनों लेखिकाओं की आत्मकथाओं के माध्यम से शोषण के कई पहलू सामने आए जिससे तत्कालीन समाज अनभिज्ञ था। यह जानते हुए कि उनके शोषण और हीन स्थिति के लिए समाज ही जिम्मेदार है। लेकिन अब तक किसी ने इस तरह खुलकर अपना प्रतिरोध नहीं जताया था। इन जागरूक और सशक्त स्त्री आत्मकथाकारों ने अपने अधिकारों के प्रति सजग होकर संघर्ष किया और बदलते परिवेश तथा समय में स्त्रियों को अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक किया।

2.शोध कार्य की प्रेरणा :-

आत्मकथाओं से मेरा विशेष लगाव रहा है। कई आत्मकथाओं के विषय वस्तु ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। अपने अध्ययन के दौरान मैंने कई आत्मकथाओं का अध्ययन किया और कई आत्मकथा लेखिकाओं के व्यक्तित्व ने मुझे बेहद प्रभावित किया है । लेखन की प्रेरणा देती यह आत्मकथा लेखिकाएं मुझे शोध की प्रेरणा देती नजर आईं कि उनके आत्मकथात्मक साहित्य पर मैं शोध करूं। साहित्यिक महत्व एवं उपयोगिता की दृष्टि से यह विषय विशिष्ट है और शोध कार्य हेतु उपयुक्त मालूम होता है।

3.शोध कार्य का उद्देश्य :-

शोध कार्य का उद्देश्य होता है अपने शोध विषय से संबंधित सत्य की खोज करना, नवीन तथ्यों की खोज करना या नवीन ज्ञान की प्राप्ति करना। इस शोध कार्य का उद्देश्य इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि साहित्य की सबसे प्रमाणिक विधा है आत्मकथा।

आत्मकथा, जिसके माध्यम से हम प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं तथा लेखक के तत्कालीन समाज और लोक व्यवहार से जुड़ सकते हैं। आत्मकथाओं में समाज तथा जीवन से जुड़े प्रसंगों के निकट पहुंचने की जो प्रवृत्ति होती है वह साहित्य को समृद्ध करती है।

4.शोध कार्य की उपादेयता :-

मेरे इस शोध कार्य में शामिल तीनों आत्मकथा लेखिकाओं की आत्मकथा और प्रस्तुति भिन्न है लेकिन फिर भी कहीं ना कहीं तीनों में समता है। सामानता इस अर्थ में है कि उनका मूल स्वर पितृ सत्तात्मक व्यवस्था का प्रतिरोध है। यह आत्मकथाएं भारतीय समाज के समक्ष कई प्रश्न खड़े करते हैं । यह महिलाएं वह महिलाएं हैं जो समाज से प्रश्न करने का साहस दिखाती हैं । उनकी आत्मकथाओं पर मेरा शोध समाज को एक दिशा प्रदान करेगा।

5.पूर्व अध्ययन एवं शोध कार्य साहित्य अवलोकन :-

1. मन्नू भंडारी के कथासाहित्य में पारिवारिक विघटन का विश्लेषण, निर्देशिका सपना चौहान ,शोधार्थी अंजलि ठाकुर 7 जनवरी 2023।
2. मन्नू भंडारी की कहानियों में चित्रित स्त्री जीवन का यथार्थ, निर्देशिका कुमकुम राय , शोधार्थी जुली कुमारी 11 नवंबर 2022।
3. मैत्रयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री राजनीतिक एवं आर्थिक संदर्भ, निर्देशिका उर्मिला मिश्रा, शोधार्थी योगेश शर्मा 21 दिसम्बर 2020।
4. मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में स्त्री संघर्ष, निर्देशक धीरजभाई वंकर शोधार्थी राधिका सिंह चौहान 3 अगस्त 2023।
5. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी चेतना, निर्देशक सुबोध मंडल शोधार्थी निरंजन राम 1 मार्च 2021 ।

6. स्त्री स्वबलंबन की अवधारणा और प्रभा खेतान के उपन्यास, निर्देशक पी वी सुमित, शोधार्थी टी वी सुरेखा 12 जनवरी 2023।

6.शोध विषय की प्रासंगिकता :-

शोध कार्य की प्रासंगिकता तभी मानी जाती है जब शोध परिणामों का लाभ जन सामान्य को प्राप्त होता है। शोधार्थी होने के नाते मेरी यह कोशिश होगी कि शोध कार्य की प्रासंगिकता को सही तरीके से प्रस्तुत कर सकूं। आज भी समाज में यथार्थ जीवन सदैव से चली आ रही परंपराओं के विरुद्ध स्वर उठाता चला आ रहा है। मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा और प्रभा खेतान की आत्मकथा में एक स्त्री के व्यक्तिगत ,सामाजिक विषयों का यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत है। इनकी आत्मकथाएं कल की ओर भी संकेत करती है तथा उसमें स्थापित सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ विरोध का संदेश हमें सचेत होने का संदेश देता है।

7.शोध कार्य का महत्व :-

शोध कार्य उच्च शिक्षा के क्षेत्र में गंभीर और महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है। इस दृष्टिकोण से शोधार्थी अपने शोध विषय का गंभीरता से अध्ययन करके पूर्ण सफलता पाने की कोशिश करते हैं। मैत्रेयी पुष्पा, मन्नू भंडारी और प्रभा खेतान के आत्मकथात्मक साहित्य की ओर प्रवृत्त होने पर समाज के यथार्थ का चित्रण बेहद सरल होगा तथा इसके माध्यम से आने वाली पीढ़ी को प्रेरणादायी और जीवनोन्मुखी दिशा मिलेगी।

8.शोध कार्य की अध्ययन पद्धति / प्रविधि, तथ्य संकलन :-

प्रस्तावित शोध का आधार वैज्ञानिक सर्वेक्षण पद्धति से होगा। जिसमें वास्तविक एवं प्रमाणिक तथ्यों का समावेश होगा। इस कार्य के संपादन के लिए मुझे विश्वसनीय तथ्यों ,

सूचनाओं, आँकड़ों आदि को संकलित करने एवं अध्ययन पद्धति को स्पष्ट प्रस्तुत करने के लिए मुझे निम्नलिखित शोध प्रविधियों का सहारा लेना पड़ सकता है -

1. सर्वेक्षण विधि

2 साक्षात्कार

3. लेखों, आलेखों का अध्ययन

4. आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति

5. सहायक सामग्री

6. पुस्तकावलोकन

7. इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री

9. शोध कार्य का ज्ञान विस्तार : -

शोध कार्य से ज्ञान में वृद्धि अर्थात शोध कार्य द्वारा हमें जो भी ज्ञान प्राप्त होता है वह हमारे लिए उपयोगी तो होता ही है साथ ही प्राप्त ज्ञान अनंत और असीम होता है इसलिए मैं शोध कार्य द्वारा प्रयत्न करुंगी कि समाज को सकारात्मक रूप से कुछ विशेष ज्ञान प्राप्त हो सके शोध कार्य के दौरान जो मुझे ज्ञान प्राप्त होगा उसे मैं सरल और स्पष्ट रूप से सुग्राही स्वरूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करूंगी जिससे भविष्य में यह इस विषय के शोधार्थियों के लिए सहायक सिद्ध हो।

10.भविष्य में शोध कार्य होने की संभावनाएँ : -

भविष्य में प्रस्तुत शोध कार्य पर और भी कार्य होने की संभावनाएँ है, क्योंकि संभावनाएँ अनंत है। हमारे सोच की दिशा ही एक नए शोध कार्य करने के लिए हमें प्रेरित करती है। इन आत्मकथाओं में जो सामाजिक संदर्भ उल्लेखित हैं वे व्यक्ति और समाज दोनों को नई दिशा देने में समर्थ हैं। व्यक्तिगत और सामाजिक चिंतन प्रस्तुत करती यह आत्मकथाएं स्त्री-पुरुष संबंधों में नए समीकरणों की तलाश करती हैं। स्त्री-पुरुष जब अपने विवेक से काम लेंगे, तब एक नये युग का निर्माण होगा। यह इस शोध कार्य की भी उपलब्धि होगी, तब आगे भी इस विषय पर शोध कार्य होते रहेंगे।

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु अध्यायीकरण :-

प्रस्तावना -

(क) शोध विषय का परिचय

(ख) शोध विषय की उपादेयता

(ग) शोध कार्य का लक्ष्य

(घ) शोध प्रविधि

1. प्रथम अध्याय - आत्मकथात्मक साहित्य

1.1. भारतीय भाषाओं की कुछ महत्वपूर्ण आत्मकथाएँ

1.2. हिंदी साहित्य में आत्मकथा लेखन परंपरा

1.3. हिंदी आत्मकथाओं में स्त्री लेखन परंपरा

1.4. प्रमुख महिला कथाकारों की आत्मकथात्मक कृतियाँ

2. द्वितीय अध्याय   - मन्नू भंडारी की आत्मकथा ‘एक कहानी यह भी’

2.1. ‘एक कहानी यह भी’ का कथ्य

2.2. ‘एक कहानी यह भी’ में समाज और पारिवारिक चेतना

2.3. ‘एक कहानी यह भी’ में आत्मकथ्य और संवेदना

3. तृतीय अध्याय - मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाएं ‘कस्तूरी कुंडल बसे’ और ‘गुड़िया भीतर गुड़िया’

3.1.1. ‘कस्तूरी कुंडल बसे’ का कथ्य

3.1.2. ‘गुड़िया भीतर गुड़िया’ का कथ्य

3.2.1 ‘कस्तूरी कुंडल बसे’ में समाज और पारिवारिक चेतना

3.2.2 ‘गुड़िया भीतर गुड़िया में समाज और पारिवारिक चेतना

3.3.1.‘कस्तूरी कुंडल बसे’ में आत्मकथ्य और संवेदना

3.3.2.‘गुड़िया भीतर गुड़िया’ में आत्मकथ्य और संवेदना

4. चतुर्थ अध्याय - प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या'

4.1.'अन्या से अनन्या' का कथ्य

4.2.'अन्या से अनन्या' में समाज और पारिवारिक चेतना

4.3.'अन्या से अनन्या' में आत्मकथ्य और संवेदना

5. पंचम अध्याय - आधुनिक स्त्री आत्मकथा लेखिकाएँ एवं उनके सामाजिक एवं पारिवारिक संघर्ष

5.1. मन्नू भंडारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' का विश्लेषण पुरुष सत्ता और अधिकारों के संदर्भ में

5.2. मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाएँ 'कस्तूरी कुंडल बसे' और 'गुड़िया भीतर गुड़िया' का विश्लेषण पुरुष सत्ता और अधिकारों के संदर्भ में

5.3. प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या'का विश्लेषण पुरुष सत्ता और अधिकारों के संदर्भ में

सहायक -ग्रंथों की सूची -

1. प्रभा खेतान, अन्या से अनन्या, राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2007, दूसरी आवृत्ति : 2010

2. कस्तूरी कुंडल बसै, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2002 दूसरी आवृत्ति : 2009

3. प्रभा खेतान, उपनिवेश में स्त्री मुक्ति-कामना की दस वार्ताएँ, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण: 2003, तीसरी आवृत्ति : 2010

4. मन्नू भंडारी, एक कहानी यह भी, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2008, दूसरी आवृत्ति: 2011

5. एक अज्ञात हिन्दू औरत, सीमन्तनी उपदेश (सं. डॉ. धर्मवीर), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 110002, संस्करण : 2004

6. कमला दास, मेरी कहानी, हिन्द पाकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, संस्करण 2010, नई दिल्ली 110003

7. सं. राजेन्द्र यादव, देहरी भई विदेश, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली - 110002, संस्करण : 2009

8. प्रज्ञा पाठक, सरला एक विधवा की आत्मजीवनी, परमेश्वरी प्रकाशन, नई दिल्ली 110092, प्रथम संस्करण : 2008

9. अमृता प्रीतम, रसीदी टिकट, किताबघर प्रकाशन, संस्करण: 2011, दिल्ली 110032

10. कृष्णा अग्निहोत्री, लगता नहीं है दिल मेरा, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली 110002, प्रथम संस्करण 2010

11. कौसल्या वैसंत्री, दोहरा अभिशाप, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली संस्करण : 2012 - 110092,

12. सुशीला टाकभौरे, शिकंजे का दर्द, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण : 2011, द्वितीय आवृत्ति : 2014 110002,

13. सुनीता गुप्ता, स्त्री चेतना के प्रस्थान-बिन्दु, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली 110002, प्रथम संस्करण : 2010

14. लता शर्मा, औरत अपने लिए, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली 110002. संस्करण 2010

15. रमणिका गुप्ता, स्त्री मुक्ति संघर्ष और इतिहास, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली 110002, संस्करण : 2014

16. सं. विजय बहादुर सिंह, मैत्रेयी पुष्पा स्त्री होने की कथा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली 110002, संस्करण : 2012

17. सुधा अरोड़ा, आम औरत जिंदा सवाल, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली 110002, संस्करण : 2009

18. डॉ. के. एम. मालती, स्त्री विमर्श भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 110002, प्रथम संस्करण: 2010, आवृत्ति 2014

19. अनामिका, स्त्री विमर्श की उत्तर-गाथा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली - 110002, संस्करण - 2017

20. सं. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, बुंदेल खंड में स्त्री, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण: 2012

21. मैत्रेयी पुष्पा, गुड़िया भीतर गुड़िया, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2008, दूसरी आवृत्ति

22. राजेन्द्र यादव, आदमी की निगाह में औरत, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2001 पहली आवृत्ति : 2010

शोध निर्देशिका :
डॉ. कुमारी उर्वशी
सहायक प्राध्यापिका
हिन्दी विभाग
राँची वीमेंस कॉलेज ,राँची

शोधार्थी :
अंकिता
एम .ए . यू . जी . सी . नेट
राँची विश्वविद्यालय ,राँची